नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।

विषय - राजनीतिशास्त्र

कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-03; सत्र 2019-20

पेपर - 08

दिनांक - 07.07.2020

टॉपिक - भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद के उदय के कारण (भाग-02)

(6.) आर्थिक असंतोष - सरकार द्वारा भारत में आर्थिक क्षेत्र में निरन्तर भारत विरोधी नीति अपनाई जाती रही। कपास पर आयात घटाना, भारतीय मिलों पर उत्पाद कर लगाने आदि से देशी सामान मंहगा और विदेशी सामान सस्ता होने लगा। इससे स्वदेशी आंदोलन विकसित हुआ। रमेशचन्द्र, विलियम डिग्बी आदि की रचनाओं में भी विदेशी शासन को निर्धनता का कारण बताया गया।

(7.) उपनिवेशों में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार - ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीयों के साथ काफी भेदभाव किया जाता था। दक्षिण अफ्रीका में उन्हें निम्न जाति का दर्जा, व्यर्थ के अपमानजनक बंधन, रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बों में यात्रा की मनाही, रात्रि 09 बजे के बाद बाहर निकलने की मनाही, 1907 का एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट आदि इसी सबसे संबंधित थे। इन सब ने भारतीयों के मन में यह भावना पैदा की कि अत्याचारों को समाप्त करने का एक मात्र उपाय भारत को स्वतंत्र करवाना है।

(8.) अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव - इस काल में विदेशों में कतिपय ऐसी घटनायें घटित हुई जिसने भारतीयों में राष्ट्रीय उत्साह और साहस की भावना और अधिक जागृत की जैसे - 1896 अबीसीनिया द्वारा इटली को पराजित करना, 1905 में जापान द्वारा रूस को पराजित करना, मिस्र, फारस, टर्की में चल रहा स्वाधीनता संग्राम, रूस में जार के खिलाफ क्रांतिकारी आंदोलन, आयरलैंड में स्वशासन के लिये संघर्ष, इटली का एकीकरण आदि। इन सबने भारतीयों में स्वदेश प्रेम जागृत किया।

(9.) लाल-बाल-पाल का नेतृत्व - उग्रवादी राष्ट्रवाद के उदय के पीछे बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिनचन्द्र पाल के विचारों, क्रियाकलापों की भी व्यापक भूमिका रही। उनका विश्वास था कि राजनीतिक भिक्षावृत्ति के स्थान पर जनजागृति तथा जनांदोलन के मार्ग को अपनाना चाहिये चाहे वह कितना भी कष्टकर क्यों न हो। इन नेताओं के क्रियाकलापों से राष्ट्रीय आंदोलन की प्रखरता बढ़ी और एक नवीन विचारधारा का विकास हुआ।

(10.) कर्जन के पूर्वगामी शासकों की अदूरदर्शिता - उग्रवादी राष्ट्रवाद के उदय के पीछे राजनीतिक कारण का भी व्यापक योगदान था। इस काल में लॉर्ड लैंसडाउन तथा लॉर्ड एल्गिन द्वितीय ने अत्यधिक अदूरदर्शी नीति अपनाई। 1897 ई. में तिलक पर लगाया गया राजद्रोह, चापेकर बंधुओं को प्राणदंड, नाटू बंधुओं को देश निकाला, संपत्ति को जब्त किया जाना आदि से अंग्रेजों के प्रति सहानुभूति और उनकी न्यायप्रियता में विश्वास घट गया। रमेशचन्द्र दत्त

Scanned with CamScanner

[illegible] के अनुसार, 'अंग्रेजों की न्याय भावना में जनता का विश्वास ऐसा हिल गया था जैसा कि पहले कभी नहीं।

(11.) लॉर्ड कर्जन का प्रतिगामी शासन (1898-1905) – लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल को भारत विरोधी नीति का चरमोत्कर्ष कहा जा सकता है जो कुछ निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

(i) अपने केन्द्रीकरण की नीति द्वारा स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की शक्ति को प्रभावित कर दिया। कलकत्ता कारपोरेशन के जनप्रतिनिधियों की संख्या घटा दी गई ताकि कारपोरेशन और उनकी समितियों में निर्वाचित भारतीय अल्पसंख्यक हो जायें और सरकारी सदस्यों का बहुमत हो जाये। सरकार के इस कार्य से व्यापक जन असंतोष फैला।

(ii) 1904 ई. में 'भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम' पास कर विश्वविद्यालयों के सिनेट तथा सिण्डीकेट सदस्यों की संख्या में कमी कर दी गई जिससे इनकी आंतरिक स्वायत्तता समाप्त हो गई और सरकारी नियंत्रण स्थापित हो गया।

(iii) सैनिक व्यय – कर्जन की सीमा नीति, तिब्बत, फारस की खाड़ी तथा चीन में सेनायें भेजने जैसे कार्य द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य विस्तार की नीति से बेतहाशा खर्च किया गया जबकि भारतीय जनता भूखों मर रही थी।

(iv) शान-शौकत – लॉर्ड कर्जन द्वारा 1903 ई. में विराट दरबार का आयोजन कर काफी व्यय किया गया जो गरीब जनता पर लगाये गये कर का दुरुपयोग था।

(v) प्रशासकीय गुप्तता अधिनियम, 1904 – इस अधिनियम के द्वारा सरकारी अधिकारियों के संबंध में कोई भी बात कहना अवैध घोषित कर दिया गया। समाचार-पत्रों में सरकार की कोई भी आलोचना नहीं की जा सकती थी। इससे जनता का विरोध और बढ़ गया।

(vi) भारत के प्रति अविश्वास और अहंकार युक्त दृष्टिकोण – अपने इसी दृष्टिकोण के आधार पर 1905 ई. में कर्जन द्वारा उच्च सरकारी पद भारतीयों को न देने की नीति अपनाई गई। जाति के स्थान पर योग्यता को आधार बनाया गया, भारतीयों के आचरण संबंधी पर अपमान जनक शब्द कहे गये। उसके इस बर्ताव और व्यवहार का तीव्र विरोध हुआ।

(vii) बंगाल का विभाजन (1905) – 'फूट डालो और राज करो' की नीति के अनुरूप उसने कूटतापूर्वक बंगाल का विभाजन किया। जिसका उद्देश्य बंगाल की बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना को कुचलना था किंतु इसने संपूर्ण भारत में राष्ट्रीयता की अभूतपूर्व भावना को जन्म दिया।

उपर्युक्त कार्यों ने भारत में उग्र राष्ट्रीयता के उदय में उल्लेखनीय एवं व्यापक भूमिका निभाई।

Scanned with CamScanner